शोध प्रतिवेदन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण और आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।"

निर्देशिका
डॉ. एकता पारीक
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
गीता शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)
(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना :–

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री ने अपने शोध कार्य से सम्बन्धित विस्तृत एवं उपयुक्त जानकारी प्राप्त करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में चयन किया गया है क्योंकि सही एवं विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली एक उपयुक्त उपकरण है। प्रश्नावली द्वारा वर्तमान आँकड़ों, सूचनाओं आदि को भली–भांति एकत्रित किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ''भरतपुर शहर के सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण व आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन'' है। उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैद्यता, परिस्थितियों के साथ अनुकूलतम उपकरणों की उपलब्धता इत्यादि आधारों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक वातावरण व आर्थिक स्तर सम्बन्धी समस्याओं व उसके प्रति दृष्टि भाव रखने वाले विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है।

आक्रामक व्यक्ति विभिन्न प्रकार के विध्वंसपूर्ण कार्य करने लगता है, वस्तुएँ उठाकर फैंकने लगता है और गाली से युक्त भाषा का प्रयोग करता है। उसमें बदले की भावना जन्म ले लेती है। ऐसे व्यक्ति आन्तरिक रूप से बहुत ही परेशान व असुरक्षित होते हैं। कभी–कभी न चाहते हुए भी नकारात्मक या समाज विरोधी कार्य करने लगते हैं।

आक्रामक व्यवहार में मूल प्रवृत्ति को मुख्य माना है। उनके अनुसार एक आक्रामक बालक वही है जो क्लेश की तीव्र मूल प्रवृत्ति के साथ पैदा होता है। सभी का कहना है कि एक बच्चा केवल इसलिये आक्रामक नहीं है कि वह क्लेश की तीव्र मूल प्रवृत्ति के साथ पैदा हुआ है, बल्कि इसलिए आक्रामक है कि उसकी मूल आवश्यकतायें जैसे– प्यार, सुरक्षा, साहस आदि अन्य दूसरी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती है।

आक्रामक व्यक्ति दूसरों के लिए ही नहीं बल्कि कभी–कभी स्वयं के ऊपर भी आक्रामक प्रवृत्ति का प्रदर्शन करता है। आत्महत्या इसी का परिणाम है।

आक्रामक एक व्यावहारिक चिन्ह है, जो वातावरण से कुछ कठिनाईयों के कारण उत्पन्न असन्तोष से होने वाली भावना है। आक्रामक व्यक्ति ऊपर से तो शक्तिशाली, वीर, क्रोधी प्रतीत होते हैं किन्तु वे अधिकांश रूप से कायर, भयातुर, अनिश्चित प्रवृत्ति के होते हैं। जो बालक अपने पालन–पोषण में निर्दयता एवं कटुता का अनुभव करते हैं वे अधिकांशतः नीरस प्रवृत्ति के होते हैं। वह दूसरों से जान–बूझकर दुःख तथा चोट पहुँचाने में सुख का अनुभव करते हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, व्यक्ति और समाज एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। एक के बिना दूसरे का कोई अस्तित्व नहीं है। वस्तुतः विद्यालय समाज का लघु संस्करण है। अतः मूल्यों का बीजारोपण विद्यालय में ही किया जाता है।

आक्रामक विद्यार्थी स्वयं के लिए ही समस्या नहीं होते अपितु परिवार तथा विश्व के लिये और भी बड़ी समस्या बन जाते हैं। हमारे देश में विद्यार्थियों में अनुशासनता की भावना जो कि आक्रामकता का एक प्रदर्शन मात्र है जिसने विविध शिक्षण संस्थाओं के शैक्षिक जीवन को अस्त–व्यस्त कर दिया है। यदि विद्यार्थी विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों को बिना विघ्न डाले ही कार्य करने दे तो

शिक्षा की उन्नति वर्तमान और प्रतिक्रियाओं से अधिक होगी। कभी–कभी विद्यार्थी आक्रामक एवं प्रतिक्रियावादी स्वभाव के कारण अनेक समस्यायें उत्पन्न करके अपने उन्नति के मार्ग में स्वयं ही बाधक बन बैठते हैं।

निम्न स्तर के बच्चे अधिक झगड़ालू होते हैं। उन्होंने यह भी बतलाया कि मध्य स्तर का समूह सामाजिक दबावों को काम करने तथा अपने सामाजिक विकास को शीघ्रता से करने के लिए प्रयास करते हैं जबकि निम्न स्तर का बच्चा शारीरिक रूप से अधिक झगड़ालू बनने के लिए उत्साहित किया जाता है जिसके परिणामस्वरूप निम्न सामाजिक, आर्थिक स्तर के बच्चे अधिक आरक्षित, दुश्मनी एवं आत्मविश्वास की कमी दिखाते हैं और ये सभी तत्व उस बच्चे के विद्यालय निष्पत्ति को रोकते हैं।

किशोरावस्था व्यक्तित्व के निर्माण की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण अवस्था है। किशोरावस्था, बाल्यावस्था व युवावस्था के मध्य की अवस्था मानी जाती है। किशोरावस्था वह संगम है जहाँ शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास अत्यन्त तीव्र गति से होने के फलस्वरूप व्यक्ति में विभिन्न क्रान्तिकारी परिवर्तन होते है।

अतः किशोर/किशोरियों के जीवन में संवेगात्मक अनुभूतियों का बाहुल्य होता है। संवेग में आकर वह कोई कार्य, तुरन्त कर डालना चाहते हैं। वह कभी–कभी उत्तेजनाओं में आकर सामाजिक नियमों और नियन्त्रणों का खण्डन करना चाहते हैं। यदि उनकी भावना को अधिक ठेस लगती है तो वह समाज विरोधी व्यवहार भी करने पर बाध्य हो जाते है।

जन साधारण का यह अनुभव है कि कुछ व्यक्ति जो समाज के अत्यन्त ही उच्च वर्ग से सम्बन्धित होते हैं वह बात–बात पर आक्रोश व्यक्त करते हैं लेकिन कुछ लोग बड़े ही सौम्य तथा मृदुभाषी होते हैं, तथा कुछ लोग निम्न आर्थिक स्थिति के व्यक्ति भी झगड़ालू प्रवृत्ति के पाये जाते हैं।

विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास का कार्य कराना है। यूनेस्को और जापान के राष्ट्रीय शिक्षा अनुसन्धान ने मूल्य शिक्षा के संयुक्त अध्ययन को अन्तिम रूप देने के लिए सन् 1980 में फरवरी–मार्च के महीने में एक कार्यशाला आयोजित की गई थी। राष्ट्रीय स्तर पर भी 27–28 मई, 1981 में शिमला में मूल्य शिक्षा पर सेमीनार का आयोजन हुआ। राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

ने 23 मार्च, 1985 में राष्ट्रीय स्तर पर मूल्य शिक्षा पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया था जिसमें विद्वान सम्भागियों ने यह व्यक्त किया था विद्यालयों द्वारा बालकों को मूल्यों की शिक्षा दी जाये क्योंकि भारत के भविष्य का निर्माण विद्यालयों में हो रहा है।

2 समस्या का औचित्य –

आक्रामक व्यवहार आचरण में सम्मिलित होकर मनुष्य के चरित्र का हिस्सा बनता है और आक्रामकता आज के विद्यार्थियों में सामान्यतः पाये जाने वाला गुण है। इसलिए आक्रामक व्यवहार को रोकने के लिए विद्यालयों में विद्यार्थियों के लिए अनुकूल वातावरण और मित्रवत् व्यवहार किया जाना चाहिए।

यदि समाज अपनी आक्रामकता को नियन्त्रित करना चाहता है तो उसे विद्यार्थियों को इस प्रकार प्रभावित करना चाहिए कि उनमें अतिवृद्धि के परिणामों के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो, उनमें यह अवबोध विकसित हो कि जनसंख्या के उचित व्यवहार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रौढ़ों की स्थिति में व्यक्तिगत रूप से क्या करना चाहिए।

आक्रामकता को दूर करने के लिए शिक्षा सहायक है और शिक्षा द्वारा सामाजिक वातावरण और आर्थिक स्तर में उत्पन्न समस्याओं को दूर किया जा सकता है। जनसंख्या की अभिवृत्ति में शिक्षा के द्वारा परिवर्तन आता है जिससे वह चिकित्सकीय उपागमों को स्वीकार करने व अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

आज किशोर सामाजिक होने के बजाय एकान्तप्रिय होते जा रहे हैं।

अतः शोधकर्त्री ने सर्वेक्षण तथा वार्तालाप के द्वारा जानकारी प्राप्त की। आज भी वर्तमान में किशोर विद्यार्थियों में आक्रामक रूप अधिक पाया जाता है, इस समस्या पर काफी शोध हुए हैं लेकिन आज भी यह विद्यमान है।

इस प्रकार इस समस्या को शिक्षा द्वारा दूर किया जा सकता है, इसके लिए सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों को सामाजिक वातावरण, नैतिकता, साहचर्य, परोपकार, समायोजन सम्बन्धी शिक्षा देना अनिवार्य है। इन सभी समस्याओं को मध्यनजर रखते हुए शोधार्थी के मन में इन समस्याओं का अध्ययन करने का विचार आया जिसके कारण शोधार्थी द्वारा अपने शोध कार्य हेतु इस समस्या कथन का चयन किया गया।

उपरोक्त विचार शोधार्थी के समक्ष निम्न प्रश्न उत्पन्न करते हैं –

(1) क्या सामाजिक वातावरण का उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव पड़ता है?

(2) क्या वर्तमान में विद्यार्थियों की भाषा अभद्र और क्रूर शब्दों वाली हो गई है?

(3) विद्यार्थी अपने संवेगों को नियन्त्रित क्यों नहीं कर पाते हैं?

(4) क्या आक्रामकता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में अत्यधिक रूप से शामिल हो रही है?

(5) क्या विद्यार्थियों को विद्यालयों में संवेगों को समायोजित करना सिखाया जा सकता है?

3 समस्या कथन –

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण और आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन।"

4 शोध अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है –

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्याप्त आक्रामक व्यवहार का अध्ययन करना।

(2) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण व आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।

(3) सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

(4) निजी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करना।

5 शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

(1) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

(2) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

(3) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

(4) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

(5) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

(6) सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

6 शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्द –

7 अनुसन्धान की विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन हेतु शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

8 शोध के चर –

(1) स्वतन्त्र चर – सामाजिक व आर्थिक वातावरण

(2) आश्रित चर – आक्रामक व्यवहार

9 प्रदत्तों के स्त्रोत –

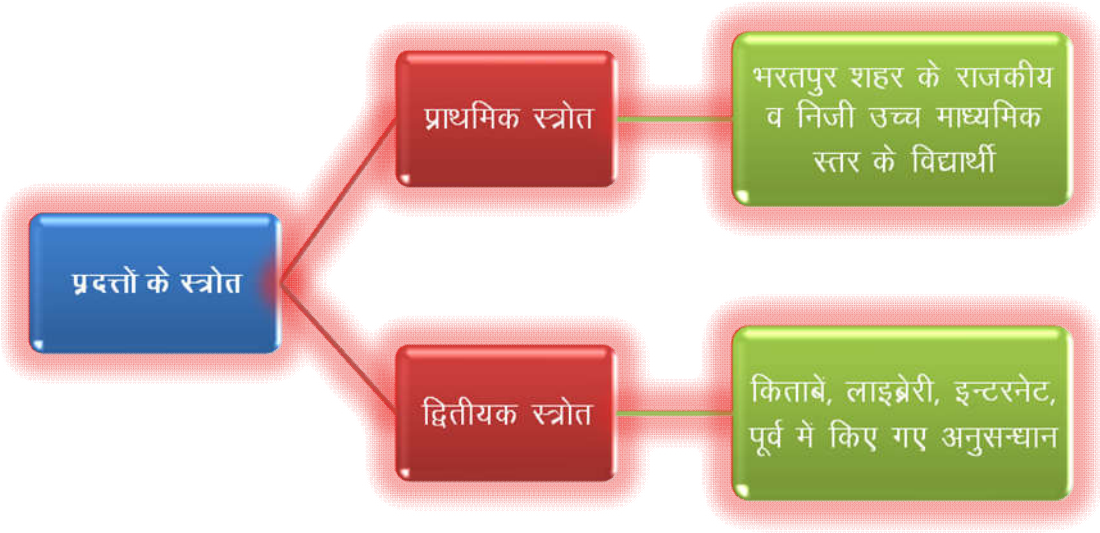

10 शोध अध्ययन में प्रदत्तों की प्रकृति –

(1) मात्रात्मक

(2) गुणात्मक

11 शोध अध्ययन की जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा भरतपुर शहर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

12 शोध अध्ययन के न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में राजकीय विद्यालयों के 40 विद्यार्थियों एवं निजी विद्यालयों के 40 विद्यार्थियों को शामिल किया गया है। इस प्रकार कुल 80 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया है।

13 शोध अध्ययन के उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपकरण इस प्रकार हैं –

स्वनिर्मित प्रश्नावली –प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण के रूप में ली है।

14 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन से सम्बन्धित परीक्षणों का विधिवत् प्रशासन करके विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्रयुक्त की जाने वाली सांख्यिकी = मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण है।

15 शोध परिणाम व व्याख्या –

परिकल्पना–1 सरकारी व निजी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार का अध्ययन किया गया जिसमें निजी विद्यालय के व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों एवं सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। अर्थात् निजी विद्यालयों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्यायें ज्यादा है। अतः इसका कारण यह हो सकता है कि सरकारी विद्यालयों के बच्चों का सामाजिक वातावरण सही नहीं है तथा विद्यार्थियों को सामाजिक वातावरण प्रभावित करता है।

परिकल्पना–2सरकारी व निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है, जिसमें सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों व छात्रों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की

आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्याएँ व सामाजिक वातावरण का आक्रामक व्यवहार पर प्रभाव समान पाया गया।

परिकल्पना–3सरकारी व निजी विद्यालय में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर सामाजिक वातावरण सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं में कुछ Point (.) आक्रामक व्यवहार कम पाया जाता है और निजी विद्यालयों में कुछ ज्यादा पाया जाता है। इसका कारण सामाजिक वातावरण निम्न व उच्च का अन्तर होता है इसलिए निजी विद्यालय की छात्राओं में आक्रामक व्यवहार अधिक होता है।

परिकल्पना–4सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया गया है। जिसमें सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर की समस्याएँ समान ही होती है।

परिकल्पना–5सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

तालिका संख्या–5, सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर के प्रभाव से सम्बन्धित आँकड़ों को प्रदर्शित करती है जिसमें सरकारी व निजी विद्यालय के छात्रों में ज्यादा अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् इसका कारण यह है कि आर्थिक स्तर

को लेकर दोनों प्रकार के विद्यालय के छात्रों पर प्रभाव पड़ता है। आर्थिक स्तर को लेकर छात्रों में आक्रामकता हावी हो सकती है।

परिपकल्पना–6 सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत् उच्च माध्यमिक स्तर की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर का प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं के आक्रामक व्यवहार पर आर्थिक स्तर के प्रभाव सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया है जिसमें सरकारी विद्यालय की छात्राओं में आक्रामक व्यवहार का निजी विद्यालय की अपेक्षा अधिक पाया जाता है क्योंकि पैसे सम्बन्धी समस्या को लेकर छात्राओं का क्रूर स्वभाव हो जाता है, क्योंकि उनकी जरूरत अधूरी रह जाती है और आवश्यक जरूरतें जब पूरी नहीं होती हैं तो आक्रामक व्यवहार हावी हो जाता है।

16 भावी शोध हेतु सुझाव–

कोई भी शोध कार्य अपने आप में सम्पूर्णता लिए नहीं हो सकता। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्त्री ने उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन का लघु शोध किया है। भावी शोधकर्त्ता इस सम्बन्ध में अध्ययन के लिए निम्नलिखित तथ्यों पर गौर कर सकते हैं –

(i) भावी शोध माध्यमिक व महाविद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है।

(ii) भावी शोध सामाजिक वातावरण व आर्थिक स्तर के अलावा

(iii) भावी शोध हेतु न्यादर्श के रूप में बड़ी संख्या में विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थियों का समावेश किया जा सकता है।

(iv) सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया जा सकता है।

(v) भावी शोध में आक्रामक व्यवहार के अलावा अन्य भावात्मक समस्याओं को भी स्थान दिया जा सकता है।

(vi) भावी शोध कार्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं के समाधान पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

(vii) भावी शोध कार्य में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं का भी अध्ययन किया जा सकता है।

(viii) सरकारी व निजी की अपेक्षा अनुदानित, गैर अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

(ix) विद्यार्थियों की आयु, बुद्धि और निष्पत्ति पर उनके सामाजिक वातावरण व आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(x) सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों का आक्रामक व्यवहार पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(xi) इस अध्ययन को विद्यालयी वातावरण के प्रभाव का अध्ययन भी किया जा सकता है।

(xii) विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों का भी अध्ययन हो सकता है।

(xiii) विकलांक किशोरों एवं सामान्य किशोरों के आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(xiv) नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं को आक्रामक व्यवहार सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने को लिया जा सकता है।

विद्यार्थियों के लिए सुझाव –

(1) विद्यार्थियों क आक्रामक व्यवहार का उपलब्धि पर प्रत्यक्ष–परोक्ष प्रभाव पड़ता है इसलिये उन्हें सकारात्मक सोच का विकास करना चाहिए।

(2) विद्यार्थियों को सामाजिक वातावरण को समझते हुए अपने स्वभाव को उपयोगी व सरल बनाना चाहिए।

(3) विद्यार्थियों को अध्ययन करते समय मन की एकाग्रता पर विशेष ध्यान देना चाहिए न कि सामाजिक वातावरण और आर्थिक स्तर को लेकर अपने मानसिक संतुलन को खराब करना चाहिए।

(4) विद्यार्थी को आत्मबल नहीं खोना चाहिए और अपने मन में चिन्ता के कारणों पर शान्ति से विचार करना चाहिए।

(5) विद्यार्थी लक्ष्य निर्धारण करके आगे बढ़े और अपने लक्ष्य पर सामाजिक वातावरण व आर्थिक प्रभाव न पढ़ने दे।

शिक्षकों के लिए सुझाव –

(1) एक शिक्षक विद्यार्थियों की मानसिक समस्याओ को सुलझाने में योगदान दे सकता है व विद्यार्थियों का सहयोग कर सकता है।

(2) पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के द्वारा विद्यार्थियों के मानसिक दबाव को एक शिक्षक दूर कर सकता है।

(3) शिक्षक के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से विद्यार्थियों का आक्रामक व्यवहार कम हो सकता है।

(4) शिक्षक विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श सेवा के द्वारा भी आक्रामकता को कम कर सकता है।

अभिभावकों हेतु सुझाव –

(1) बच्चों के आक्रामक व्यवहार के लिए समाज का वातावरण ही नहीं अपितु माता–पिता व परिवार भी जिम्मेदार होता है इसलिए अभिभावकों की भी जिम्मेदारी होती है कि वह अपने बच्चों को सही माहौल दें और उनको समझें।

(2) अभिभावकों को अपने बच्चों के प्रति सूक्ष्म दृष्टि रखनी चाहिए जिससे बच्चों के मानसिक तनाव का पता लगा सके।

(3) अभिभावकों का प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार अपने बच्चों के प्रति होना चाहिए जिससे प्रेरणास्पद होने के साथ–साथ उनके मानसिक तनाव को कम करने में सहायक हो, जिससे बच्चे आक्रामक रूप धारण न करे।

(4) अभिभावकों को आर्थिक स्तर का ध्यान रखते हुए बच्चों को सही रास्ता दिखाना चाहिये।

(5) अभिभावकों को अपने बच्चों से अधिक आकांक्षाएँ नहीं रखनी चाहिए।

18 शैक्षिक निहितार्थ –

सरकारी व निजी विद्यालय के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं मानसिक समस्याओं में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है अर्थात् 14 से 18 वर्ष

के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लगभग मानसिक समस्याएँ एक–सी होती है।

चूंकि सामाजिक वातावरण एवं आर्थिक स्तर के प्रभाव से विद्यार्थी आक्रामक व्यवहार करने लगता है, उसी प्रकार विद्यालयी वातावरण, पारिवारिक, सांस्कृतिक व अन्य कारणों से भी विद्यार्थियों व किशोरों में तनाव हो सकता है और तनाव के कारण आक्रामक व्यवहार कर सकते है।

अतः शिक्षक, अभिभावक व सामाजिक अन्य तत्व किशोरों पर अनुचित दबाव या प्रभाव ना डालें, उनके साथ सामान्य व्यवहार करें जिससे बच्चा/विद्यार्थी आक्रामक रूप न ले।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक स्तर के सभी बच्चें किशोरावस्था में होते हैं तथा यह अवस्था बच्चों के बनने तथा बिगड़ने की अवस्था होती है जिसमें भौतिक सुविधाओं की ओर ज्यादा आकर्षित होते हैं जो विद्यार्थियों में दुःख या आक्रामकता का कारण बनती है।

अतः समाज, परिवार और शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थियों के सामने केवल महंगी, उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा व बड़े–बड़े सपनों से सम्बन्धित जानकारी न दे अपितु सरल–सुलभ वातावरण व शिक्षा के बारे में जानकारी दें ताकि विद्यार्थी अपने लक्ष्य व अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। अगर एक किशोर विद्यार्थी अपनी समस्या का समाधान कर पायेगा तो वह तनावमुक्त रहेगा और आक्रामक व्यवहार करने से बच सकता है क्योंकि सही रास्ता और उचित मार्गदर्शन के द्वारा ही आक्रामकता को दूर किया जा सकता है।